1

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

न क्वेयं यथा त्वम्।

– *सामवेद 203*

हे प्रभो तुझ जैसा काई नहीं है। आप अनुपम हैं।

O God ! Verily there is none like you. You are matchless.

वर्ष 41, अंक 47 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 10 सितम्बर, 2018 से रविवार 16 सितम्बर, 2018
विक्रमी सम्वत् 2075 सृष्टि सम्वत् 1960853119
दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

आर्यसमाज के वरिष्ठ वैदिक विद्वान, शोधार्थी, चिन्तक, लेखक, इतिहासज्ञ

डॉ० भवानीलाल भारतीय का निधन – आर्यजगत में शोक

आर्यसमाज को वैदिक विद्वान, विचारक, वक्ता, लेखक एवं चिन्तक रूप में अपनी अमूल्य सेवाएं देने वाले प्रख्यात साहित्यकार डॉ. भवानीलाल भारतीय जी का दिनांक 11 सितम्बर, 2018 को 90 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका जन्म 1 मई, 1928 को राजस्थान के नागौर जिले में स्थित परवतक्ष में हुआ था। अपने छात्र जीवन में ही वे आर्यसमाज से जुड़े। उन्होंने हिन्दी और संस्कृत से एम.ए. किया। वे पंजाब विश्वविद्यालय दयानन्द शोध पीठ के डायरेक्टर रहे। आपके निर्देशन में अनेक विद्यार्थियों ने अपने शोध कार्यों को पूर्ण किया।

स्व. श्री भवानी लाल भारतीय जी अपने सम्पर्णू जीवन में भारत सहित अन्य अनेक देशों में आर्यसमाज एवं वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार में संलग्न रहे। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के अनुसार दिनांक 12 सितम्बर, 2018 को किया गया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी ने उनके निधन को आर्यजगत की अपूर्णीय क्षति बताते हुए शोक व्यक्त किया। सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी एवं महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने भी भारतीय जी के निधन पर गहरा शोक व्यक्त करते हुए हार्दिक श्रद्धांजलि दी।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के संयुक्त तत्त्वावधान में भारत की राजधानी नई दिल्ली में आयोजित

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन
25 से 28 अक्टूबर 2018
दिल्ली
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

25, 26, 27, 28 अक्टूबर, 2018

आयोजन स्थल – स्वर्ण जयन्ती पार्क, सैक्टर 10 रोहिणी, दिल्ली में

महर्षि दयानन्द नगर निर्माण का शुभारम्भ यज्ञ

एवं

जन जागृति हेतु भव्य शोभायात्रा का आयोजन

रविवार 16 सितम्बर 2018 ★ शोभायात्रा – सायं 3 बजे ★ वृहद् यज्ञ : सायं 4 बजे

शोभायात्रा शुभारम्भ
स्वामी दयानन्द उद्यान, नेताजी सुभाष प्लेस, दिल्ली-110034

वृहद यज्ञ
सम्मेलन स्थल: स्वर्ण जयन्ती पार्क, रोहिणी सै. 10

समस्त आर्यसमाजों के अधिकारी, सदस्य एवं कार्यकर्तागण अपनी गाड़ियों, टैम्पो, बसों, कार, ई-रिक्शा, मोटर साइकिलों पर ओ३म् ध्वज लगाकर अपनी आर्यसमाज के बैनरों के साथ भारी संख्या में पहुंचे।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2018 के कार्यों को गति देने के उद्देश्य से दिनांक 16 सितम्बर 2018 को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में वेद प्रचार मण्डल उत्तर-पश्चिमी दिल्ली के तत्त्वावधान में भव्य शोभायात्रा का आयोजन किया जा रहा है। शोभायात्रा का शुभारम्भ स्वामी दयानन्द उद्यान (डिस्ट्रिक्ट पार्क) एस. डी. ब्लॉक पीतमपुरा के सामने निकट नेताजी सुभाष प्लेस से दोपहर 3 बजे होगा। शोभायात्रा सुभाष प्लेस से होकर मधुबन चौक, साई बाबा चौक, डी.सी. चौक होते हुए सम्मेलन स्थल स्वर्ण जयन्ती पार्क पहुंचेगी जहां सायं लगभग 5 बजे विशाल यज्ञ के साथ शोभायात्रा का समापन होगा व महाशय धर्मपाल जी चेयरमैन (एम. डी. एच.ग्रुप) द्वारा आर्य महासम्मेलन स्थल के कार्यक्रमों का शुभारम्भ किया जाएगा व कार्यक्रमों की विस्तृत चर्चा की जाएगी। कार्यक्रमोपरान्त प्रीतिभोज के साथ कार्यक्रम सम्पन्न होगा।

समस्त आर्यसमाजों एवं आर्य शिक्षण संस्थाओं के पदाधिकारियों, सदस्यों और कर्मठ कार्यकर्ताओं एवं सम्मेलन की व्यवस्था की लिए बनी सभी कार्य समितियों के सदस्यों से निवदेन है कि इस पुनीत एवं ऐतिहासिक अवसर पर अपने समाज की ओर टैम्पो, कार, ई-रिक्शा, स्कूटी, मोटरसाइकिल पर ओ३म् ध्वज लगाकर व सुन्दर झांकियों इत्यादि के साथ बड़ी संख्या में शोभा यात्रा में सम्मिलित होकर महर्षि दयानन्द नगर (अस्थाई) के निर्माण के साक्षी बनें। शोभा यात्रा और कार्यक्रम में सम्मिलित होने के लिए अपने परिचितों और मित्रों को भी प्रेरित करें। **किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए श्री जोगेन्द्र खट्टर मो. 9810040982 से सम्पर्क** करें।

निवेदक महासम्मेलन आयोजन समिति, दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं, वेद प्रचार मंडलों के अधिकारी एवं कार्यकर्तागण

वेद-स्वाध्याय

अग्निदेव की महती महिमा

तं पृच्छता स जगामा स वेद स चिकित्वां इयते स न्वीयते।
तस्मिन्त्सन्ति प्रशिषस्तस्मिन्निष्टयः स वाजस्य शवसः शुष्मिणस्पतिः।। -ऋ. 1/145/1
ऋषिः **दीघतमा औचथ्यः।।** देवता - **अग्निः।।** छन्दः **विराड्जगती।।**

शब्दार्थ-हे मनुष्यो! **तम्** = उस अग्निदेव से **पृच्छत** = पूछो, क्योंकि **सः** = वह **जगाम** = सर्वत्र गया हुआ है, **स वेद** = वह सब-कुछ जानता है, **सः** = वह **चिकित्वान् ईयते** = जानता हुआ जाता है, **सः** = वह **नु** = बड़ी जल्दी **ईयते** = जाता है। **तस्मिन्** = उसी में **प्रशिषः** = उस प्रशासन-आज्ञाएं **सन्ति** = हैं, **तस्मिन्** = उसमें **इष्टयः** = सब यज्ञ व इष्टियां हैं, **सः** = वह **वाजस्य** = ज्ञान का, **शवसः** = बल का, **शुष्मिणः** = और मनोबल का **पतिः** = पति है।

विनय- है मनुष्यो! तुम जो कुछ जानना चाहते हो, पूछना चाहते हो, वह अपने अग्निदेव से पूछो। इसके सिवाय संसार में और कोई तुम्हारे सब प्रश्नों का ठीक-ठीक उत्तर दे सकने वाला नहीं है। संसार के बड़े-से-बड़े विद्वान् तुम्हें जो कुछ उत्तर देंगे उससे भी तुम्हें तभी सन्तुष्टि मिलेगी जब तुम्हारा (अन्दर का) अग्नि, अन्तरात्मा उस पर अपनी स्वीकृति की छाप लगा देगा, अतः तुम्हारी सब जिज्ञासाएं, सब समस्याएं, अन्त में इस अन्तरात्मदेव की शरण में जाने से ही हल होंगी। क्या तुम सन्देह करते हो कि इस अन्दर के आत्मा की सब स्थानों में और सब विषयों में गति नहीं है? नहीं, यह आत्मा तो सदा अपने परम आत्मा में बसता है और अपनी चिन्मय वृत्ति को जहां चाहे वहां भेज सकता है। एवं, यह अग्नि सब जगह जाता है और वहां सब-कुछ जानता है। अरे देखो, यह चित्स्वरूप आत्मा सब-कुछ जानता हुआ सब कहीं जा रहा है, पलक झपकने में, सकल्पमात्र से करोड़ों मीलों तक, करोड़ों युगों तक पहुंच रहा हे। यों कहना चाहिए कि यह ज्ञानमय अग्नि सब जगह, सब विषयों में पहले ही पहुंचा हुआ है और संसार के महापुरुषों को जो जगत् में कुछ महान कार्य करने की आज्ञाएं-प्रेरणाएं मिला करती हैं, वे भी उनकी इस अन्तराग्नि से ही प्रकट होती हैं। सब प्रशासन, सब ईश्वरीय आज्ञा इसी में हैं। एवं, ऋषि महात्माओं को समय-समय पर जो तत्कालीन विपत्ति के हटाने के लिए किन्हीं यज्ञों का, इष्टियों का, दर्शन हुआ करता है वह भी उनकी अन्तरात्मा में ही होता है। सचमुच सब यज्ञ भी इसी में निहित है। एवं, समस्त ज्ञान और बल का यही पति है। बल ही क्यों, सब बलियों का-संसार के बड़ी-से-बड़ी फ़ौज रखने वाले राजा आदि सब बलियों का-यही पति है। अहो, अपने इस अग्निदेव के इस परम माहात्म्य को अनुभव करो और अब से अपने सब प्रश्न इसी ज्ञानमयदेव के सामने रक्खो और कहीं क्यों भटकते हो?

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

समलैंगिक जोड़े क्या पैदा करेंगे?

आज कुछ लोग भारतीय इतिहास और पौराणिक ग्रंथों के कुछ किस्से लेकर यह समझाने का प्रयास कर रहे है कि यह भारतीय संस्कृति का हिस्सा है जैसे कुछ बुद्धिजीवियों ने महादेव शिव का अर्धनारीश्वर वाला रूप समलैंगिकता से जोड़ दिया तो किसी ने पौराणिक आख्यान विष्णु का मोहिनी रूप धारण कर शिव को रिझाना अप्राकृतिक संबंधों से जोड़ दिया। कुछ कल्पित किस्से उठाकर यह साबित किया जा रहा है कि जैसे भारतीय सभ्यता आदि काल से अप्राकृतिक संबंधो के आस-पास ही जमा रही हो? यदि ऐसा था तो क्यों ऋषि वात्सायन ने कामसूत्र में यह सब पूरी तरह निषेध माना और स्वास्थ्य के लिए संकट के तौर पर दर्शाया लेकिन वैदिक काल के उदाहरण इन पश्चिमी सभ्यता के दत्तक पुत्रों को कडवे लगते है।

पता नहीं इस विषय पर लिखना जरुरी था भी या नहीं किन्तु ये पता है जब धर्म और समाज की हानि करने के लिए कुछ लोग एकजुट हो जाये तो तब कृष्ण भी अर्जुन से कहते है कि उठो पार्थ अब धनुष साधो। हाल ही में सर्वोच्च न्यायालय के 5 सदस्य संविधान पीठ ने एकमत से भारतीय दंड संहिता की 158 साल पुरानी धारा 377 के उस हिस्से को निरस्त कर दिया जिसके तहत परस्पर सहमति से अप्राकृतिक यौन संबंध बनाना अपराध था। अदालत ने कहा यह प्रावधान संविधान में प्रदत्त समता के अधिकार का उल्लंघन करता है। सर्वोच्च न्यायालय के इस फैसले के साथ ही भारत 26 वां वह देश बन गया जहाँ अप्रा तिक यौन सम्बन्ध स्वीकार किये जायेंगे।

असल में समलैंगिकता को अगर साफ शब्दों में कहा जाए तो पुरूष का पुरूष के साथ संबंध बनाना व महिला का महिला के साथ संबंध बनाना समलैंगिकता है। भारत में इसके खिलाफ वर्ष 1861 में अंग्रेजों द्वारा धारा 377 बनाई गयी थी जिसके तहत समलैंगिक अर्थात अप्राकृतिक यौन सम्बन्ध को अपराध के रूप में देखा जाता था। किन्तु अब इसे न्यायिक स्वीकृति मिल गयी, धीरे-धीरे सामाजिक स्वीकृति भी मिल ही जाएगी।

यह हम सभी जानते हैं कि प्रकृति ने महिला और पुरुष को एक-दूसरे के पूरक के तौर पर बनाया है। दोनों के बीच उत्पन्न हुए शारीरिक संबंध एक नए जीवन, अगली पीढ़ी को जन्म देते हैं। अब समलैंगिक लोग किस चीज को जन्म देंगे आप बखूबी समझ सकते हैं! देखा जाये तो समलेंगिक संबंधो की मांग करने वाले अधिकांश लोग आज युवा है। अपने मानसिक आनंद की तृप्ति के लिए यह लोग लड़ रहे है किन्तु कल जब यह लोग बुजुर्ग होंगे तब कहाँ होंगे? कहाँ जायेंगे, कौन इन्हें संभालेगा, कौन इनकी देखभाल करेगा समाज पर बोझ बढेगा या सरकार पर? या फिर इनकी इन अप्राकृतिक आदतों का दंश आने वाले सभ्य समाज के बच्चें झेलेंगे? तब क्या यह अपराध की श्रेणी में नहीं आएगा, क्या तब यह अपराध नहीं माना जायेगा? आखिर इन सवालों के उत्तर कौन देगा क्या समलैंगिक समुदाय का कोई मौखिक प्रवक्ता खड़ा दिखाई दे रहा है?

कुछ लोग सोच रहे होंगे कि इससे समाज पर क्या प्रभाव पड़ता है, हर एक इन्सान अपनी मनोवृति लेकर पैदा होता है। जो लोग ऐसा सोच रहे है उन्हें पता ही नहीं कि यह पूरा घटनाक्रम कोई आधुनिक भारत का न्यायिक किस्सा नहीं है, बल्कि भारतीय संस्कृति पर हमले की एक सोची समझी नीति का हिस्सा है। वर्ष 1957 में चेन्नई में जन्मी अंजली गोपालन जो अमेरिका में पली बढ़ी ने 1995 में नाज फाउंडेशन नाम की संस्था की नींव रखी थी। शुरुआत में संस्था का कार्य एचआईवी से ग्रस्त लोगों की देखभाल और उन्हें सहयोग देना था किन्तु अपनी स्थापना के 6 सालों बाद ही नाज फाउंडेशन ने अपना असली रंग दिखाना शुरू किया और समलैंगिक यौन संबंधों का मुद्दा पहली बार 2001 में दिल्ली हाईकोर्ट में उठाया और आखिर आज उसे अपने मूल उदेश्य में सफलता मिल ही गयी।

संस्था और इससे जुड़े आधुनिक बुद्धिजीवी तर्क दे रहे है कि आदिम युग में जब समाज, सभ्यता जैसी कोई चीज मौजूद नहीं थी तब समलैंगिक संबंध बड़े ही सामान्य समझे जाते थे। आज भी विश्व की बहुत सी आदिवासी जनजातियों में समलिंगीय संबंध बिना किसी रोकटोक के अपनाए जाते हैं। यदि यह तर्क है तो हमें शर्म आनी चाहिए कि क्या हम आज 21 वीं सदी में है या आदिम सभ्यता में जो इस तरह की चीजें स्वीकार कर रहे है? आखिर हमने कौनसा बोद्धिक विकास किया, क्या ऐसा नहीं है कि कुछ लोगों के व्यक्तिगत मानसिक, शारीरिक आनंद ने हमें आज उल्टा आधुनिक से आदिम युग में पहुंचा दिया? आखिर क्यों प्राचीन अशिक्षित सभ्यता की तुलना आज की शिक्षित सभ्यता से की जा रही है? यह जरुरी है या इनकी मजबूरी है इस प्रश्न का जवाब कौन बुद्धिजीवी देगा?

आज कुछ लोग भारतीय इतिहास और पौराणिक ग्रंथों के कुछ किस्से लेकर यह समझाने का प्रयास कर रहे है कि यह भारतीय संस्कृति का हिस्सा है जैसे कुछ बुद्धिजीवियों ने महादेव शिव का अर्धनारीश्वर वाला रूप समलैंगिकता से जोड़ दिया तो किसी ने पौराणिक आख्यान विष्णु का मोहिनी रूप धारण कर शिव को रिझाना अप्राकृतिक संबंधों से जोड़ दिया। कुछ कल्पित किस्से उठाकर यह साबित किया जा रहा है कि जैसे भारतीय सभ्यता आदि काल से अप्राकृतिक संबंधो के आस-पास ही जमा रही हो? यदि ऐसा था तो क्यों ऋषि वात्सायन ने कामसूत्र में यह सब पूरी तरह निषेध माना और स्वास्थ्य के लिए संकट के तौर पर दर्शाया लेकिन वैदिक काल के उदाहरण इन पश्चिमी सभ्यता के दत्तक पुत्रों को कडवे लगते है।

जबकि असल मायनों में एक शोध की माने तो करीब 75 प्रतिशत समलैंगिक व्यक्तियों को डिप्रेशन और उदासी का शिकार पाया गया। इन के अलावा आत्महत्या, मादक द्रव्यों के सेवन और रिश्ते की समस्याओं की आशंका भी इनमें बनी रहती है, यह एक रोग जिसके लिए उपचार के केंद्र खड़े करने थे वहां इस बीमारी को समाज का हिस्सा बनाया जा रहा है। स्त्री पुरुष के बीच का नैतिक संबंध है विवाह, जिसे समाज द्वारा जोड़ा जाता है और उसे प्रकृति के नियमों के साथ आगे चलाया जाता है। समाज में शादी का उदेश्य शारीरिक संबंध बनाकर मानव श्रृखंला को चलाना है। यहीं समलैंगिक प्रकृति का नियम है। जो सदियों से चलता आ रहा है। लेकिन समलैंगिक शादियां या यौन सम्बन्ध ईश्वर द्वारा बनाये गये इस मानव श्रृंखला के नियम को बाधित करती है। प्राकृतिक शादियों में महिलाएं बच्चे को जन्म देती है जबकि एक ही लिंग की शादियों में दंपत्ति बच्चा पैदा करने में प्राकृतिक तौर पर असमर्थ होता है।

क्या यह साफ तौर पर मानसिक बीमारी नहीं है, इसे उदाहरण के तौर पर देखें कि अभी हाल ही में हरियाणा के मेवात में कई लोगों ने मिलकर एक बकरी के साथ यौन पिपासा शांत की थी। जिसे सभ्य समाज और कानून ने बर्दास्त से बाहर बताया था। यदि ऐसे लगातार 10 से 20 मामले सामने आये और कोई संस्था इसके पक्ष में खड़ी होकर यह मांग करें कि यह तो मनुष्य का अधिकार है यह उसके जीने का ढंग है। अत इसे कानूनी रूप से मान्यता दी जाये। तब क्या होगा क्या आधुनिकता के नाम पर समाज और कानून इसे भी स्वीकार कर लेगा? यदि हाँ तो फिर जो धर्म, कानून और समाज जो मनुष्य को मनुष्य बनाने में सहायता करता है उसका क्या कार्य रह जायेगा? अपवाद और अपराध हर समय और काल में होते रहे है पर जरुरी नहीं कि उन्हें अधिकार की श्रेणी में लाया जाये। - ***सम्पादक***

इस माँ की भी पुकार सुनें

.....अधिकांश का जवाब होगा पानी! किन्तु ग्लोबल वार्मिंग जलवायु परिवर्तन के कारण नदियों पर जो संकट मंडरा रहा है उसे देखकर तो लगता नहीं! आप स्वयं अपने इर्दगिर्द देखिये आपके देखते-देखते कितनी छोटी-छोटी नहरे और नदियाँ आज या सूख गयी या फिर गंदे नालों में तब्दील हो गयी। इसे देखकर सहज अंदाजा लगाया जा सकता है कि हमारी नदियों का जीवन भी अब लम्बा नहीं बचा। अब अंत में उत्तर हो सकता है कि सौर ऊर्जा शायद भविष्य में यही सबसे उपयुक्त विकल्प हमारे हाथ में होगा। .....

एक माँ वह होती है जो हमें जन्म देती है। हमारा पालन-पोषण करती है। दूसरी 'मां' वह है जिसे दुनिया धरती माता के नाम से जानती है। यह हमें साँस, खाना-पीना देती है, रहने के लिए स्थान देती है। इसे यूँ कहें कि पैदा होने के बाद दुनिया में जितनी चीजें दिखती हैं, सब कुछ इसी धरती माता की देन है। जब हमारी जन्म देने वाली मां यदि बीमार पड़ जाती हैं तो हम परेशान हो उठते है हम उसके इलाज के लिए दिन-रात एक कर देते हैं जबकि इस मां ने दो-चार ही बेटे-बेटियां जन्मे हैं। लेकिन धरती माता जिसके कई करोड़ 'बेटे-बेटी' हैं वह बीमार है और आज पुकार रही है लेकिन कोई संभालने वाला नहीं है।

आखिर क्यों आज हम इस 'मां' के दुश्मन बन गए हैं? हरे-भरे वृक्ष काट रहे हैं। इसके गर्भ में रोज खतरनाक परीक्षण कर रहे हैं। इतना जल दोहन किया कि कई हिस्से जलविहीन हो गए हैं। पूरी दुनिया में इस वक्त जितना पानी बचा है उसमें से 97.5 फीसदी समुद्री पानी है जोकी खारा है। बाकी 1.5 फीसद बर्फ के रुप में है। सिर्फ 1 फीसद पानी ही हमारे पास बचा है जो कि पीने योग्य है। साल 2025 तक भारत की आधी आबादी और दुनिया की 1.8 फीसदी आबादी के पास पीने का पानी नहीं होगा और 2030 तक वैश्विक स्तर पर पानी की मांग आपूर्ति के मुकाबले 40 फीसदी ज्यादा हो जाएगी।

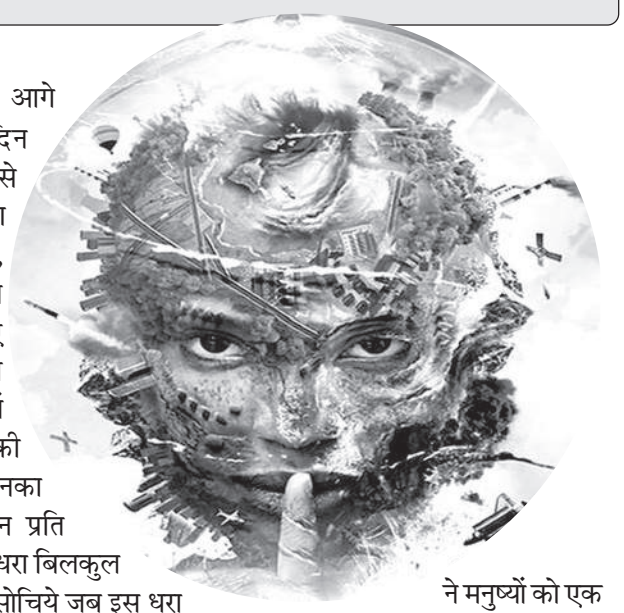

इसके बाद यदि आगे बढे तो दिन पर दिन प्राकृतिक संसाधनो जैसे खनिज पदार्थो का उपयोग जैसे कोयला, अभ्रक समेत अन्य खनिज पदार्थो के लिए इस धरा का दोहन जारी है। यदि विकसित देशों की खपत के ऑकडों की माने तो 2050 तक इनका दोहन 140 अरब टन प्रति वर्ष हो जाएगा। यानि धरा बिलकुल खोखली हो जाएगी। सोचिये जब इस धरा के अन्दर जल नहीं होगा ऊपर पेड़ नहीं होंगे तब क्या होगा? वही होगा जो हम हमेशा सुनते आये है तब प्रकृति में प्रचंड उथल-पुथल होगी। भूकम्प के कारण पूरे देश के देश पृथ्वी के गर्भ में समा जायेंगे। जहाँ-जहाँ उत्पन्न सभ्यताएँ होगी, वे देश महासागर में परिणत हो जायेंगे।

सब जानते है प्रकृति के रुप में भगवान ने मनुष्यों को एक बेहद ही खूबसूरत उपहार दिया है। लेकिन हम इसी उपहार को संजोय रखने के लिए नाकामयाब साबित हो रहे है, हमारी इस फितरत का खामियाजा धरती को भुगतना पड़ रहा है। हमारे पास खुबसूरत प्रकृति के अलावा कई अन्य चीजें जैसे अन्न, पानी, वृक्ष, उर्जा, खनिज पदार्थ आदि है किन्तु अगर हम समय रहते नहीं चेते तो हमारे पास ये पदार्थ भी नहीं रहेंगे। तब हम क्या करेंगे?

कहा जाता है आवश्यकता अविष्कार की जननी है। किन्तु यदि हम समय रहते आवश्यकताओं के अविष्कारों को अपना ले तो हम पृथ्वी को या अपनी आने वाली पीढ़ी को काफी हद तक बचा सकते है। आज विधुत उत्पादन में उपयोग होने वाला सबसे बड़ा ईंधन कोयला है जोकि धरती के गर्भ को चीरकर निकाला जा रहा है। लेकिन कब तक? अगले कुछ सालों में ही कोयला पूरी तरह से समाप्त हो जाएगा। हम इस तथ्य से भी इनकार नहीं कर सकते हैं कि देश की आबादी में तेजी से वृद्धि हो रही है। देश में अधिकांश बिजली (लगभग 53 प्रतिशत) का उत्पादन कोयले से होता है और जिसके चलते यह भविष्यवाणी की गई है कि वर्ष 2040-50 के बाद देश में कोयले के भंडार समाप्त हो जाएंगे। इसके बाद दुनिया विधुत के लिए क्या इजाद करेगी?

अधिकांश का जवाब होगा पानी! किन्तु ग्लोबल वार्मिंग जलवायु परिवर्तन के कारण नदियों पर जो संकट मंडरा रहा है उसे देखकर तो लगता नहीं! आप स्वयं अपने इर्दगिर्द देखिये आपके देखते-देखते कितनी छोटी-छोटी नहरे और नदियाँ आज या सूख गयी या फिर गंदे नालों में तब्दील हो गयी। इसे देखकर सहज अंदाजा लगाया जा सकता है कि हमारी नदियों का जीवन भी अब लम्बा नहीं बचा। अब अंत में उत्तर हो सकता है कि सौर ऊर्जा शायद भविष्य में यही सबसे उपयुक्त विकल्प हमारे हाथ में होगा।

सौर ऊर्जा का एक अतुलनीय स्रोत होने के साथ-साथ भारत की अन्य गैर-परंपरागत ऊर्जाओं में सबसे बेहतरीन विकल्पों में से एक है। इससे प्रकृति को कोई नुकसान नहीं है इस कारण आज सौर ऊर्जा, भारत में ऊर्जा की आवश्यकताओं की बढ़ती माँग को पूरा करने का सबसे अच्छा तरीका है। इस दिशा में देश की सबसे प्राचीन सामाजिक संस्था आर्य समाज ने एक अच्छी पहल का शुभारम्भ करने जा रही है जिसमें प्रत्येक आर्य समाज मंदिर और आर्य संस्थान अगले कुछ समय में सौर ऊर्जा का इस्तेमाल कर प्रकृति को बचाने में अपना सहयोग प्रदान करेंगे या यह कहें कि धरती माँ को बचाने के लिए बेटे की भूमिका निभाएगा।

आंकड़े बताते है कि भारत के लगभग सभी प्रति वर्ग मीटर के हिस्से में, प्रति घंटे 4 से 7 किलोवाट की औसत से सूर्य का प्रकाश प्राप्त होता है। भारत में प्रति वर्ष लगभग 2300 से 3200 घंटे धूप निकलती है। इस कारण हम बड़ी मात्रा में सौर ऊर्जा से विधुत उत्पादन कर सकते है। साथ ही हम लोगों से पोलीथीन का प्रयोग समाप्त कर पर्यावरण बचाने में जागरूकता के कार्यों के साथ भूगर्भीय जल का स्तर बढ़ाने के लिए मकानों भवनों में वर्षा जल संग्रह की जागरूकता का भी कार्य करेंगे। वृक्षों के बचाव तथा जल के प्रयोग में भी लोगों को सावधानी बरतने के लिए आग्रह करेंगे। सब जानते है कि लाख कोशिशों के बाद भी दुनिया भर के वैज्ञानिक 'दूसरी पृथ्वी' को नहीं ढूंढ सकें. अत धरती माता के बचाव के लिए सबको आगे आना चाहिए। वरना हमारे पास पछताने के अलावा कुछ नहीं बचेगा।

- राजीव चौधरी

क्रान्तिकारियों की कथा

अमर शहीद राजगुरु

गतांक से आगे -

इस 'इनफिल्ट्रेशन' (घुसपैठ) का परिणाम उत्साहवर्धक निकला। शम्भूनाथ को क्रांतिकारियों की गुप्त गतिविधियों की सूचनाएं और उनके इरादे सुचारु रूप से ज्ञात होने लगे। कानपुर के पुलिस अधीक्षक को अपनी रिपोर्ट दिखाने के बाद वे उन्हें 'स्पेशल मेसिंजर' द्वारा स्पेशल ब्रांच हेडक्वार्टर्स, इलाहाबाद भेजने लगे। अंग्रेज़ अफ़सर शम्भूनाथ से बहुत ही प्रभावित हुए और उन्हें डी. आई. एस. से सी.आई.डी. स्पेशल ब्रांच में ले लिया गया।

उन्हीं दिनों उरई (जालौन) निवासी वीरभद्र तिवारी नामक एक नवयुवक को फोड़ने में शम्भूनाथ को असाधारण सफलता प्राप्त हुई। कुछ समय तक दोनों गिलिश बाज़ार, कानपुर के एक ही मकान में रहे भी थे। उनके निवास स्थान के बीच एक मामूली-सी पार्टीशन बाल-भर थी। दोनों में पटती भी खूब थी। वीरभद्र 'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी' की कार्यकारिणी समिति का एक सदस्य था।

शम्भूनाथ की सिफ़ारिश पर वीरभद्र तिवारी को सी. आई. डी. स्पेशल ब्रांच, यू.पी., में 'सोर्स' (मुखबिर) की हैसियत से 200 रुपये मासिक वेतन पर नियुक्त कर लिया गया। इसके अलावा आने-जाने का ख़र्च और दीगर इख़राजात भी दिये जाने लगे।

उस ज़माने में यह रक़म बहुत बड़ी चीज थी। अत: वीरभद्र को अधिक पैसा न ख़र्च करने का स्पष्ट आदेश भी दे दिया गया, जिससे पार्टी के चना-चबेना खाकर गुज़र-बसर करने वाले सेनानी उसके ऊपर शक-शुबहा न कर सकें।

वीरभद्र की केवल एक ही शर्त थी कि शम्भूनाथ के अलावा वह और किसी अफ़सर से मिलेगा नहीं। बात क़ायदे की थी। 'सिक्योरिटी रिस्क' अपने सिर कौन लेता? इसी कारणवश बिना हीला-हवाला किये तुरन्त ही यह बात मान ली गयी।

हालांकि चन्द्रशेखर आज़ाद अपने आने-जाने, ठहरने का प्रोग्राम किसी को बताते न थे, फिर भी पार्टी के एक प्रमुख व्यक्ति हाने के नाते वीरभद्र को उनके 'मूवमेण्ट' ज्ञात होते ही गये। यशपाल ने भी इस नेक काम में वीरभद्र की काफ़ी सहायता की। संसार के सभी गुप्तचर विभागों का यह अटूट नियम है कि जब तक कोई इत्तिला कम से कम दो विभिन्न सूत्रों द्वारा 'कन्फ़र्म' नहीं हो जाती, उसे पूरी अहमियत कभी नहीं दी जाती।

- क्रमश:

- धर्मेन्द्र गौड़ : साभार :

क्रान्तिकारी आन्दोलन के अधखुले पन्ने

क्रान्तिकारी आन्दोलन के अधखुले पन्ने : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्त करने के लिए मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन
25, 26, 27, 28 अक्टूबर 2018

सम्मेलन स्थल :- स्वर्ण जयंती पार्क, रोहिणी, सैक्टर-10, दिल्ली-85
विश्व शान्ति यज्ञ, योग व तपोनिष्ठ संन्यासियों, वैदिक विद्वानों द्वारा सत्संग
तथा प्रवचन का लाभ उठाने हेतु लाखों की संख्या में भाग लेकर कार्यक्रम को सफल बनायें।
सम्मेलन कार्यालय : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1 दूरभाष : 9540029044
E-mail : aryasabha@yahoo.com, Website : www.aryamahasammelan.org, www.thearyasamaj.org
YouTube : thearyasamaj 9540045898

एक रुपीय यज्ञ हेतु दिल्ली में अनेक स्थानों पर यज्ञ प्रशिक्षण : विश्व रिकार्ड की तैयारी

आप आर्यसमाज के अधिकाधिक सदस्यों के साथ भाग लें : प्रशिक्षण/जानकारी हेतु श्री सतीश चड्डा जी 9313013123 से सम्पर्क करें

दिल्ली में अक्तूबर, 2018 में आयोजित होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के अवसर पर होने वाले विशाल एक रूपीय यज्ञ की तैयारी हेतु दिल्ली के विभिन्न विद्यालयों एवं संस्थाओं में यज्ञ प्रशिक्षण शिविर आयोजित किए जा रहे हैं। इस हेतु आर्य अनाथालय पटौदी हाउस दरियागंज में यज्ञ प्रशिक्षण कार्यक्रम सम्पन्न इस प्रशिक्षण शिविर में श्री सत्यप्रकाश जी के सानिध्य में 400 सौ अधिक छात्र- छात्राओं ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। इसी के अन्तर्गत जुगमिंदर आर्य वैदिक स्कूल नया बांस में विद्यार्थियों एवं अध्यापिकाओं को तीन दिवसीय यज्ञ प्रशिक्षण प्रदान किया गया। इन शिविर में प्रशिक्षण प्राप्त विद्यार्थियों को महासम्मेलन के अवसर पर आयोजित विशाल एकरूपीय यज्ञ कार्यक्रम में भाग लेने का अवसर प्रदान किया जाएगा।

यदि आप भी प्रशिक्षण प्राप्त करके महासम्मेलन के अवसर पर आयोजित होने वाले एक रूपीय यज्ञ में भाग लेना चाहते हैं तो अपनी आर्यसमाज/विद्यालय/संस्थान में आयोजित करने हेतु यज्ञ व्यवस्था संयोजक श्री सतीश चड्डा जी से 9313013123 पर सम्पर्क करें।

प्रचार हेतु शोभायात्रा/प्रभातफेरी आयोजित करें

समस्त आर्य समाजों, आर्य विद्यालयों, गुरुकुलों एवं अन्य सहयोगी संस्थानों के पदाधिकारियों से निवेदन है कि अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2018 के अवसर पर सम्मेलन से चार दिन पूर्व अपने प्रतिदिन अपने-अपने क्षेत्रों में सम्मेलन के प्रचार एवं जन साधारण को आमन्त्रित करने पधारने की प्रेरणा देने के लिए प्रात:काल अथवा सायंकाल जैसा आप उचित समझें शोभायात्राएं/प्रभातफेरियां आयोजित करें, जिससे जन साधारण में जानने की उत्सुकता तथा जागृति का संचार हो।

कृपया अपनी प्रचारयात्रा/शोभायात्रा/प्रभातफेरी का विवरण तिथि, समय, स्थान, रूट आदि की जानकारी सम्मेलन कार्यालय को अवश्य भेजें, जिससे आर्यसन्देश साप्ताहिक में प्रकाशित किया जा सके। - ***संयोजक***

भव्य स्मारिका का प्रकाशन

सभी आर्य समाजें व आर्य संस्थाएँ विज्ञापन अवश्य भेजें

यदि आप सम्मेलन के अवसर पर प्रकाशित होने वाली स्मारिका में विज्ञापन रूप में अपनी आर्यसमाज / संस्था की विशेष गतिविधियों का विवरण प्रकाशित करना चाहते है, जिससे आर्यसमाज के इतिहास में आपकी संस्था का नाम अंकित हो। स्मारिका 15 अक्टूबर तक तैयार हो जायेगी और 23×36×8 साईज में प्रकाशित होगी। पूरे पृष्ठ का विज्ञापन साईज 7.5"×10" का एवं आधे पृष्ठ का साईज 7.5"×5" होगा। आप अपना चैक/ड्राफ्ट **"दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा - महासम्मेलन-2018"** के नाम केवल खाते में उक्त पते पर भिजवाकर कृतार्थ करें। विज्ञापन सामग्री एवं डिजाईन हमें 30 सितम्बर 2018 तक अवश्य भिजवा दें। दरें निम्न प्रकार हैं -

(श्वेत श्याम विज्ञापन)		(रंगीन- चार रंगों में विज्ञापन)	
1. चौथाई पृष्ठ	5000/-	4. चौथाई पृष्ठ	7500/-
2. आधा पृष्ठ	7500/-	5. आधा पृष्ठ	12500/-
3. पूरा पृष्ठ	10000/-	5. पूरा पृष्ठ	21000/-

विज्ञापन, संस्था/आर्यसमाज/ पारिवारिक परिचय दें : यदि आप अपना कोई विज्ञापन, अपनी संस्था/आर्यसमाज/ अपने परिवार के सम्बन्ध में सामग्री प्रकाशित करवाना चाहते हैं तो आप विज्ञापन के रूप में अपने पारिवारिक पृष्ठभूमि और कार्य का परिचय दे सकते हैं। - ***अजय सहगल, सम्पादक***

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली-2018

25-26-27-28 अक्टूबर, 2018

तद्नुसार कार्तिक कृष्ण १, २, ३, ४ विक्रमी २०७५

स्थान : स्वर्ण जयन्ती पार्क, सै. 10, रोहिणी, दिल्ली

दिल खोलकर सहयोग करें

अक्टूबर-2018 में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन अपने आप में बहुत बड़ा सम्मेलन होगा। सम्पूर्ण विश्व से 2 लाख से अधिक आर्य जनों के इसमें पहुँचने की आशा है। इसे देखते हुए सम्मेलन की सभी व्यवस्थाओं एवं सुविधाओं के लिए आप सबका आर्थिक सहयोग सादर अपेक्षित है। सभी आर्यजनों, आर्य संस्थाओं, आर्य समूहों, प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं और आर्य महिला सभाओं/ संस्थाओं से निवेदन है कि अपनी सहयोग राशि चैक/बैंक ड्राफ्ट **"दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा-महासम्मेलन-2018"** के नाम बनाकर भेजने की कृपा करें। यह सम्मेलन आप का है और आप के सहयोग से ही यह हर प्रकार से अद्वितीय बन सकता है। कृपया अपनी सहयोग राशि **'संयोजक'** के नाम **'अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन,15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001'** के पते पर भेजें। **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया समस्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत आयकर छूट प्राप्त है।**

- ***संयोजक***

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन -2018 की तैयारियों व व्यवस्थाओं हेतु

श्री आदेश कुमार गुप्ता, मेयर उत्तरी दिल्ली से भेंट एवं आमन्त्रण

उत्तरी दिल्ली स्वागत समिति के अध्यक्ष बनने पर स्वागत : दिया हर सम्भव सहयोग का आश्वासन

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली-2018 जोकि रोहिणी के स्वर्णजयन्ती पार्क में 25-28 अक्तूबर को आयोजित होगा, में उत्तरी दिल्ली के महापौर श्री आदेश गुप्ता जी को आमन्त्रित करने के लिए आर्यसमाज का प्रतिनिधि मंडल 14 सितम्बर को सिविक सेंटर पहुंचा। प्रतिनिधि मंडल में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री ओम प्रकाश आर्य, महामंत्री श्री विनय आर्य, मंत्री श्री सुरेशचन्द्र गुप्ता, श्री अरुण प्रकाश वर्मा, श्री सुखबीर सिंह आर्य, श्री वीरेंद्र सरदाना, आर्य केन्द्रीय सभा के महामंत्री श्री सतीश चड्डा, मंत्री श्री योगेश आर्य, जोगेन्द्र खट्टर, श्री एस. पी. सिंह, रघुमल आर्य कन्या सी. सै. स्कूल के मैनेजर श्री संजय कुमार आर्य जी एवं आर्य सहयोगी श्री एन. के. गुप्ता जी भी उपस्थित थे। सभा महान्त्री श्री विनय आर्य जी ने महासम्मेलन आयोजन समिति की ओर से पत्र महापौर महोदय जी को देते हुए उत्तरी दिल्ली महासम्मेलन स्वागत समिति के माननीय अध्यक्ष का उत्तरदायित्व स्वीकार करने का निवेदन किया, जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार करते हुए दिल्ली नगर निगर की ओर से हर सम्भव सहयोग एवं योगदान प्रदान करने का आश्वासन दिया।

उत्तराखण्ड आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत कार्यकर्ताओं की बैठक सम्पन्न

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की तैयारी की चलते आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड की प्रान्तीय सभा की बैठक सम्पन्न। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री प्रकाश आर्य जी ने सम्बोधन के साथ अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की तैयारी को लेकर विस्तृत चर्चा की गयी। बैठक की अध्यक्षता डॉ विनय विद्यालंकार जी ने की। बैठक में उत्तराखण्ड राज्य की विभिन्न आर्यसमाजों के सैकड़ों कर्मठ कार्यकर्ताओं, अधिकरियों एवं सदस्यों ने भाग लिया। - ***मन्त्री***

सिनसिनाटी नगर, अटलांटा में आर्य समाज की स्थापना

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के तत्त्वावधान में 15 से 22 जुलाई 2018 के बीच अटलांटा के पांच सितारा होटल में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन हिमाचल प्रदेश के महामहिम राज्यपाल डॉ देवव्रत जी ने किया। दो सत्रों में तीन विषयों माता-पिता का संतान के निर्माण में योगदान, गृहदायित्व पर आचार्य आनन्द पुरुषार्थी जी ने अपने विचार प्रकट किये। कार्यक्रम का शुभारम्भ ध्यान योग उपासना प्रशिक्षण से किया गया। सिनसिनाटी नगर जोकि अटलांटा से 725 किमी. व शिकागो से 463 किमी. दूर है वहां 10 अगस्त को एक परिवार में यज्ञ करवाने के बाद उपस्थित श्रद्धालुओं से चर्चा कर आर्य समाज की स्थापना की गई। प्राध्यापक डॉ. अरुण नागपाल जी को प्रधान, श्री रवि त्रिवेदी जी को मंत्री व श्री राघवेन्द्र जी को कोषाध्यक्ष नियुक्त किया गया। अमेरिका सभा प्रधान श्री विश्रुत आर्य, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा मंत्री श्री प्रकाश आर्य एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा महामंत्री श्री विनय आर्य जी से अधिकारियों की फोन पर चर्चा करवाई गई। सभी ने इस ऐतिहासिक कार्य हेतु हर्ष व्यक्त करते हुए हस सम्भव सहयोग का आश्वासन दिया व अपनी-अपनी शुभकामनाएं प्रदान की।

-आचार्य आनन्द पुरुषार्थी

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2018

नवीनतम सूचनाओं व जानकारियों हेतु जुड़ें व्हाट्सएप्प पर और साझा करें विचार

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन -2018 दिल्ली में

वानप्रस्थ और संन्यास-दीक्षा

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली-2018 में इस बार भी गत सम्मेलन की भांति वानप्रस्थ और संन्यास की दीक्षा के लिए नि:शुल्क वानप्रस्थ और संन्यास की दीक्षा का भव्य कार्यक्रम आयोजित होगा। जो आर्य महानुभाव इस अवसर पर आर्यजगत् के मूर्धन्य संन्यसी वैदिक विद्वानों से वानप्रस्थ अथवा संन्यास की दीक्षा लेना चाहते हों, इस कार्यक्रम में सादर आमन्त्रित हैं।

दीक्षा के इच्छुक महानुभाव कृपया अपना विवरण '**संयोजक, यज्ञ समिति**' के नाम **सम्मेलन कार्यालय - 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली**-110001 पर अथवा aryasabha@yahoo.com पर भेजें ताकि उनके संस्कार की समस्त व्यवस्था बनाई जा सके। - ***महासम्मेलन संयोजक***

Veda Prarthana - II Regveda - 19/2

ब्रह्म च क्षत्रं च राष्ट्रं च विशश्च त्विषिश्च।
यशश्च वर्चश्च द्रविणं च।।
– अथर्ववेद 12/5/8

Braham cha shatram cha rashtram cha vishashcha tiwashishcha.
Yashashcha varchashcha dravinam cha.
- Atharva Veda 12:5:8

Learned Persons, Warriors, Business Persons, Labor Should All Work Together For Nations Progress.

- Acharya Gyaneshwarya

Continue from Last Issue

The fourth thing the mantra advises is that a nation should train experts in various types of agriculture, animal husbandry, land and waterr management, mineral resources, heavy in-dustry, energy, transportation on land, water and air and other natural resources. This would enable all segments of the nation and the society to prosper as well as prevent food and water shortages, flood damage from excessive rains, drought damage from limited rainfall etc.

The fifth mesage of the mantra is that in many societies when some people become very wealthy (especially if they did not work hard to earn wealth), they become lazy, negligent, selfish, attached to various vices and do not believe in God or virtuous conduct. To prevent this from happening, the administrators/rulers as well as the learned of the society through various means including media, should keep promoting virtuous values such as caring for others, humbleness, kindness, self-control etc. for the benefit of the whole society.

The sixth message of the mantra is that prosperity through education, sciences, agriculture and industry should be promoted for the welfare of the whole society whereby a common citizen feels inspired, happier and contented.

The seventh thing the mantra advises is that the nation should promote healthy healits including eating good balanced diets, daily exercise etc so that citizens of the nation are healthy, strong, full of energy and luster, and are attractive. In addition, our buildings, gardens, roads, ponds, lakes rivers, waterfalls, dams, agricultural fields and forests all should be well managed, clean and attractive so the whole nation gets fame and recognition.

Lastly, the eighth message of the mantra is that the wealth generated through the commerce and trade(both within the nation and internationally) of various goods produced through agriculture, mineral resources, industry, energy etc., should be used for the welfare of the whole public within our nation and all over the world. Poverty and lack of basic necessities of life make a society and the nation weak entities and unhappy places to live.

If the above mentioned eight core values and responsibilities are carried out diligently in our society and the nation, there is no doubt that our nation can become prosperous, strong and a happy place to live and grow, otherwise it will be doomed to failure. Dear Supreme Father it is our prayer to You that with Your grace we may be able to uproot ignorance, injustice, poverty, and hoarded wealth from our nation and may we succeed in making our society and nation full of prosperity, strength, education and learning, virtuous values and happiness.

To Be Continue....

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली-2018 के अवसर पर

21-22वां आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में 21वां सम्मेलन उच्च आय वर्ग एवं उच्च शिक्षित प्रोफेशनलय युवक युवतियों के लिए तथा 22वां आर्य परिवार युवक युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन का आयोजन अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के अवसर पर सम्मेलन स्थल – स्वर्ण जयन्ती पार्क, सैक्टर-10, रोहिणी नई दिल्ली में 26-27 अक्तूबर को प्रात: 10 बजे किया जाएगा।

समस्त आर्य परिवारों से अनुरोध है कि अपने विवाह योग्य पुत्र-पुत्रियों के आर्य परिवारों से सम्बन्ध जोड़ने के लिए परिचय सम्मेलन में शीघ्रातिशीघ्र पंजीकरण कराने का कष्ट करें। **उच्च वर्ग के लिए पंजीकरण शुल्क 800/- रुपये** एवं **सामान्य वर्ग के लिए पंजीकरण शुल्क 300/-** है। पंजीकरण फॉर्म **www.thearyasamaj.org** से डाउनलोड किया जा सकता है। आवेदन हेतु पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ '**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा**' के नाम वर्गानुसार राशि **800/- अथवा 300/- रुपये** का डिमाण्ड ड्राफ्ट संलग्न भेजें अथवा 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम **खाता संख्या 910010001816166 IFSC - UTIB0000223 एक्सिज बैंक करोल बाग शाखा** में जमा कराकर रसीद फार्म के साथ भेंजे। आवेदन भेजने की **अन्तिम तिथि 15 अक्तूबर, 2018** है। इसके बाद प्राप्त आवेदनों को विवरणिका में प्रकाशित नहीं किया जा सकेगा। आप अपना/अपने बच्चों का पंजीकरण **www.matrimony. thearyasamaj.org** पर ऑनलाईन भी कर सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें-

अर्जुनदेव चढ्ढा, राष्ट्रीय संयोजक (मो. 9414187428)
श्रीमती विभा आर्या, संयोजिका (मो. 9810054398)

शोक समाचार

कर्नल रवीन्द्र कुमार वर्मा को पत्नीशोक

आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली के पूर्व प्रधान, आर्य पब्लिक स्कूल राजा बाजार के प्रबन्धक, रघुमल आर्य कन्या पाठशाला के प्रधान एवं सभा मन्त्री श्री अरुण प्रकाश वर्मा जी के ज्येष्ठ भ्राता श्री रवीन्द्र कुमार वर्मा जी की धर्मपत्नी श्रीमती रविकान्ता वर्मा का दिनांक 11 सितम्बर को दिल्ली से पंजाब जाते समय रेल में ही हृदयाघात होने से निधन हो गया। वे लगभग 73 वर्ष की थी। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से 12 सितम्बर को लोदी रोड शमशान घाट पर पं. कर्णदेव शास्त्री द्वारा वेद मन्त्रों के उच्चारण के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी सहित अन्य अनेक आर्यसमाजों के अधिकारियों एवं सदस्यों ने उपस्थित होकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

आओ ! संस्कृत सीखें

संस्कृत वाक्य अभ्यास: भाव वाचक ल्युट् प्रत्यय (67)

गतांक से आगे....

(ल्युट् च) धातु से भाव अर्थात् क्रिया को कहने में ल्युट् (अन) प्रत्यय होता है। ल्युट् का यु शेष बचता है व उसको अन हो जाता है। अन प्रत्ययान्त शब्द नपुंसक लिङ्ग में होते हैं।

उदाहरण- बालकस्य गमनं पश्य । यहां गम् (जाना) धातु से ल्युट् (अन) प्रत्यय हुआ है जिसका अर्थ मूल धातु के समान ''जाना'' ही हुआ अत: वाक्य का अर्थ होगा ''बालक का जाना देखो''।

2. पयस: पानं शोभनं भवति।
दूध का पीना अच्छा होता है।
3. त्वं स्रोतसि स्नानं कुरु।
तुम स्रोत में स्नान करो।
4. बालक: वासस: धारणं करिष्यति।
बालक कपड़ों को धारण करेगा।
5. अद्य रात्रौ भवान् नभस: दर्शनं करोतु
आज रात्रि में आप आकाश का दर्शन करो।
6. एतत् साधो: वचस: कथनम् अस्ति।
यह साधु के वचन का कथन है।
7. जीवनस्य प्रथमे काले तपस: आचरणं स्यात्।
जीवन के प्रथम समय में तप का आचरण होवे।
8. लेखक: लेखनम् अकरोत्।
लेखक ने लेखन किया।
9. बालक: पुस्तकस्य पठनं करोति ।
बालक पुस्तक का पढना करता है ।
10. माता पुत्रस्य भरणं पोषणं च करोति।
माता पुत्र का भरण-पोषण करती है।

***- आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय,* मो. 9899875130**

प्रेरक प्रसंग

शव का दाह-कर्म ही होगा

मारीशस में सरकारी नियमानुसार किसी शव का दाह-कर्म नहीं किया जा सकता था। बीसवीं शताब्दी के आरम्भ की घटना है कि मारीशस में एक सैनिक टुकड़ी आई। इनमें कुछ हरियाणा व पंजाब के आर्य-सैनिक भी थे। इनमें से किसी की मृत्यु हो गई। नियमानुसार उसे दबाने के लिए कहा गया। आर्यवीर सैनिकों ने ऐसा करने से इन्कार कर दिया। सरकार ने पुलिस की सहायता से शव को भूमि में गाड़ना चाहा, परन्तु ये सैनिक विद्रोह पर तुल गये। सरकार को ललकारा- देखते हैं कि हमारा शव कौन छूता है? सरकार झुक गई। आर्यों की मारीशस में यह पहली बड़ी जीत थी। मारीशस में यह प्रथम दाह कर्म था।

यही लोग जाते-जाते सत्यार्थप्रकाश की एक प्रति दो-एक मित्रों को दे गये। आर्यसमाज का बीज बोनेवाले यही थे। आज तो-

लहलहाती है खेती दयानन्द की।

निश्चय ही ये सब लोग नींव के पत्थर थे। कृतज्ञता इस बात की माँग करती है कि मैं पाठकों को यह स्मरण कराऊँ कि स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी महाराज केवल सेनानी के रूप में ही इतिहास बनानेवाले न थे, अपितु इतिहास के गम्भीर विद्वान् तथा इतिहास को सुरक्षित करनेवाले भी थे। मारीशस को भारत से जोड़नेवाले, इस द्वीप के महत्त्व को समझने व समझाने वाले तथा इसका इतिहास व भूगोल लिखनेवाले वे प्रथम भारतीय विद्वान् व नेता थे। उस दूरदर्शी साधु की दृष्टि ने तब मारीशस का महत्त्व जाना जब भारत के सब राजनैतिक नेता गहरी नींद में सोये हुए थे। यह उपर्युक्त सब सामग्री उन्हीं की पुस्तक से ली गई है।

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

***तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी* : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

ठहरने के लिए क्या आप 'होटल' चाहते हैं

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में आप की भागीदारी महत्त्वपूर्ण है। आप सभी का सहर्ष स्वागत है। आप इस अवसर पर अधिकाधिक संख्या में आएँ और अन्यों को इसके लिए प्रेरित करें। इस अवसर पर यदि आप ठहरने के लिए होटल में आवास सुविधा चाहते हैं तो संयोजक समिति द्वारा कुछ होटलों में सशुल्क आवास व्यवस्था उपलब्ध कराई जा रही है। सामान्य होटल करोल बाग क्षेत्र में मैट्रो के निकट, रोहिणी क्षेत्र में 2 स्टार ओयो रुम सम्मेलन स्थल से 2 किमी क्षेत्र में तथा 3 स्टार होटल सम्मेलन स्थल से 3-4 किमी की दूरी पर हैं। होटल शुल्क (सभी करों सहित) इस प्रकार है-

सामान्य होटल (करोलबाग): 1500/- रुपये प्रति रात्रि दो व्यक्तियों के लिए

2 स्टार ओयो रुम : 2500/- रुपये प्रति रात्रि दो व्यक्तियों के लिए

3 स्टार (विद ब्रेक फास्ट) : 3500/- रुपये प्रति रात्रि दो व्यक्तियों के लिए

यदि आप कमरे में तीसरे बैड की व्यवस्था चाहते हैं तो अतिरिक्त शुल्क पर बैड उपलब्ध हो सकेंगे। उसके लिए आपको स्वयं होटल में बात कर लें। अनुमानित रूप से तीसरे बैड के लिए सामान्य होटल में 300/-, 2स्टार में 500/- तथा 3 स्टार में 800/- रुपये में देय होंगे। अतिरिक्त बैड की ये दरें अनुमानित हैं। इसके लिए आप स्वयं अपने आबंटित होटल में पहुंचकर बात करें।

इसके अतिरिक्त राहिणी क्षेत्र में **2000/- रुपये प्रति रत्रि तीन लोगों के लिए भी सामान्य होटल** उपलब्ध हैं।

सभी होटल पूर्णत: ए.सी., अटैच टॉयलेट और आवश्यक सुविधाओं से युक्त हैं। यदि आप सुविधा का लाभ उठाना चाहते है तो देय राशि का बैंक ड्राफ्ट **"दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा - महासम्मेलन-2018"** के नाम बनाकर अपने नाम, पता एवं दूरभाष सहित पूर्ण विवरण पत्र द्वारा सम्मेलन कार्यालय को भेजें।

नोट : आप स्वयं भी रोहिणी, पीतमपुरा, शालीमार बाग एवं आस-पास के क्षेत्रों में धर्मशाला/होटला ओयो रुम विभिन्न बैवसाइटों के माध्यम से बुक करा सकते हैं आप द्वारा स्वयं बुक कराने से सम्भव है कुछ कम राशि में बुकिंग हो सके।

- संयोजक, आवास समिति

आवास व्यवस्था हेतु कृपया ध्यान दें

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली-2018 के अवसर पर यदि आप सम्मेलन स्थल मैदान में ही बनें आवासों में ठहरने की व्यवस्था चाहते हैं तो कृपया ध्यान दें -

1. सम्मेलन के दिनों में रात्रि का मौसम हल्की ठंड वाला होगा। अत: अपने ओढ़ने एवं बिछाने के लिए सामान्य चादर या पतला कम्बल अवश्य साथ लाएं, जिससे आपको सुविधा हो।

2. जो महानुभाव ग्रुप में आ रहे हैं। वे अपने ग्रुप लीडर का नाम, पता, फोन नं. और ग्रुप में आने वाले सदस्यों की सूची बनाकर आवास समिति के नाम सम्मेलन कार्यालय के पते पर भेजें अथवा aryasabha@yahoo.com पर ईमल करें। अपने ईमेल/पत्र पर **"आवास व्यवस्था हेतु"** अवश्य लिखें ताकि आपके लिए आवास एवं ट्रांस्पोर्ट व्यवस्था की जा सके।

जो व्यक्ति एक साथ, एक ही साधन से एक ही समय पर पहुंच रहे हैं, उसे ही ग्रुप कहा जाएगा। अत: यदि आप एक ही संस्था/आर्यसमाज के सदस्य होने पर भी अलग-अलग समय/साधन से आ रहे हैं तो उसके लिए पृथक से ग्रुप लीडर बनाएं और उसी के हिसाब से पधारने वाले सज्जनों की सूची भेजें। - *संयोजक, आवास*

रेल यात्रा से पधारने वाले आर्यजनों के लिए ट्रांस्पोर्ट (यातयात) व्यवस्था : कृपया ध्यान दें

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली-2018 के अवसर पर दिल्ली पधार रहे समस्त आर्यजनों की सुविधा हेतु सूचित किया जाता है कि महासम्मेलन आयोजन समिति की ओर से **ट्रांस्पोर्ट व्यवस्था** केवल **24 अक्तूबर की प्रात: से 25 अक्तूबर देर रात्रि तक** केवल और केवल दिल्ली के **प्रमुख रेलवे स्टेशनों - नई दिल्ली, पुरानी दिल्ली, हजरत निजामुद्दीन, आनन्द विहार, सराय रोहिल्ला रेलवे स्टेशनों** से ही यात्रियों को महासम्मेलन स्थल - **"स्वर्ण जयन्ती पार्क, सै. 10, रोहिणी दिल्ली-85"** तक पहुंचाने उपलब्ध होगी। आप कहां से, कब, कितने बजे किस स्टेशन पर पहुंच रहे हैं इसकी सूचना अपने ग्रुप लीडर के माध्यम से ग्रुप लीडर के नाम, पते, फोन नं. और ग्रुप में आने वाले सदस्यों की सूची बनाकर सम्मेलन कार्यालय के पते पर भेजें अथवा aryasabha@yahoo.com पर ईमल करें।

अपने ईमेल/पत्र पर **"आवास एवं ट्रांस्पोर्ट व्यवस्था हेतु"** अवश्य लिखें ताकि आपके लिए आवास एवं ट्रांस्पोर्ट व्यवस्था की जा सके। **वापसी में** भी इसी प्रकार **केवल 28 अक्तूबर की प्रात: से देर रात्रि तक** सम्मेलन स्थल से रेलवे स्टेशनों तक ही ट्रांस्पोर्ट व्यवस्था उपलब्ध होगी। आर्यजन इस सेवा का लाभ उठावें।

कृपया नोट करें - दिल्ली के बस अड्डों से यात्रियों के लाने-ले जाने की कोई व्यवस्था नहीं की गई है। बसों आने वाले आर्यजन दिल्ली मैट्रो सुविधा का प्रयोग करें।

- संयोजक, यातायात समिति

सार्वदेशिक सभा एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित
अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन - 2018
25-28 अक्तूबर, 2018 : स्वर्ण जयन्ती पार्क, सै.-10, रोहिणी, दिल्ली

मुख्य पंजीकरण फार्म

पंजीकरण संख्या ..... जन्मतिथि:...../...../.....

नाम.....

पिता/पति का नाम .....

मोबाइल .....व्हाट्एप्प.....

फोन (नि.) .....(कार्या.).....

ई-मेल .....

पूरा पता .....

.....

राज्य .....देश .....पिन ☐☐☐☐☐☐

शैक्षिक योग्यता (अन्तिम): .....

व्यवसाय: व्यापार ☐ सेवारत ☐ सेवानिवृत ☐ अन्य ☐

यदि सेवारत हैं तो पद .....

संस्था का नाम-पता.....

.....

सम्बन्धित आर्यसमाज/संस्था का नाम .....

क्या आप भविष्य में सभा द्वारा भेजी गई सभी सूचनाओं के SMS/Whatsapp अपने दिए गए मोबाईल पर प्राप्त करना चाहेंगे? हां ☐ नहीं ☐

दिनांक ..... हस्ताक्षर .....

पंजीकरण संख्या ..... जन्मतिथि:...../...../.....

नाम.....

दिनांक ..... समय .....

(हस्ताक्षर कार्यालय प्रतिनिधि)

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2018, दिल्ली

रेल भाड़े में 50% छूट : अभी से रेलवे आरक्षण कराएं

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2018 दिल्ली में भाग लेने हेतु दिल्ली आने वाले सभी आर्य महानुभावों को भारत सरकार की ओर से रेल भाड़े में 50% की छूट प्रदान की गई है। छूट का लाभ लेने वाले महानुभाव अपनी आर्यसमाज/संस्था के लैटर हैड पर पधारने वाले सदस्यों की सूची नाम-पता-आयु-मो. नं. के साथ बनाकर भेजें। सम्मेलन कार्यालय की ओर से तत्काल रेल भाड़ा छूट फार्म कोरियर/स्पीडपोस्ट द्वारा भिजवा दिए जाएंगे। रेलवे भाड़ा छूट प्राप्त करने हेतु निर्देश -

1. एक व्यक्ति हेतु एक फार्म भरा जाएगा। टिकट आने-जाने की एक साथ होगी।
2. दिल्ली से 300 किमी से अधिक की दूरी वाले महानुभावों को ही इस छूट का लाभ प्राप्त हो सकेगा।
3. जिन महानुभावों - वरिष्ठ नागरिकों/ स्वतन्त्रता सेनानियों/दिव्यांगों को पहले से ही रेलवे द्वारा छूट दी जा रही है उन्हें इस छूट का लाभ नहीं हो सकेगा।
4. छूट केवल दूसरे दर्जे/श्यनयान दर्जे के लिए ही प्राप्त की जा सकेगी।

अधिक जानकारी के लिए **श्री सुरेशचन्द्र गुप्ता जी को 9211333188** पर व्हाट्एप्प करें aryasabha@yahoo.com पर ईमेल करें अथवा महासम्मेलन कार्यालय को लिखें अथवा।- *संयोजक*

वर चाहिए

दिल्ली निवासी सुश्री शैली, तलाकशुदा, कद 5'2'' रंग गोरा, जन्म 27/10/1983 एम.ए.बी.एड, एम.सी.डी. दिल्ली में एसिस्टेंट टीचर, पूर्णत: शाकाहारी, पिता सरकारी सेवा से रिटायर्ड, एक भाई हेतु सुयोग्य व्यवसायी/सेवारत वर की आवश्यकता है। कोई जाति-बन्धन नहीं, दहेज रहित विवाह।

सम्पर्क करें

- 9899252879, 9873133647

गुरुकुल प्रभात आश्रम के ब्रह्मचारियों के किया प्रतिभा प्रदर्शन

उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान द्वारा आर्ष गुरुकुल नोएडा में विभिन्न वर्गों में अनेक प्रतियोगिताएं 18 अगस्त को आयोजित की गई। इन प्रतियोगिता में भारत के अनेक गुरुकुलों के ब्रह्मचारियों ने उत्साह के साथ भाग लिया। इस अवसर पर गुरुकुल के कुलाध्यक्ष स्वामीजी महाराज ने अपने आशीर्वचन देते हुए कहा कि प्रतियोगिताएं आत्मनिरीक्षण का अवसर प्रदान करती हैं। इस प्रकार की प्रतियोगिताओं से अपने अन्दरी परिष्कार करत हुए अपने ज्ञान का संवर्द्धन करते रहना चाहिए।

सोमवार 10 सितम्बर, 2018 से रविवार 16 सितम्बर, 2018
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 13-14 सितम्बर, 2018
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 12 सितम्बर, 2018

संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) द्वारा आयोजित सिविल सर्विसेज IAS परीक्षा - 2019

भाग लेने के इच्छुक विद्यार्थी ध्यान दें

आर्यसमाज के शिक्षण संस्थानों/गुरुकुलों/सेवाकेन्द्रों/बालवाड़ियों, डी.ए.वी. संस्थानों/ विद्यालयों से शिक्षा प्राप्त ऐसे प्रतिभावान छात्र/छात्राएं जो वर्ष 2019 में आयोजित होने वाली सिविल सर्विसिज एग्जामिनेशन में भाग लेना चाहते हैं, अर्थित एवं मूलभूत आवश्यकताओ के अभाव के कारणों से परीक्षा तैयारियां नहीं कर पा रहे हैं उन सबके लिए आर्यसमाज की ओर से स्वर्णिम अवसर।

आर्य प्रतिभा विकास संस्थान की ओर से राष्ट्रवादी विचारधारा वाले, आर्य शिक्षण संस्थानों में शिक्षा प्राप्त सुयोग्य पात्रों को आर्थिक सहयोग एवं परीक्षा तैयारियों के लिए प्रशिक्षण की सुविधा प्रदान करने की घोषणा की जाती है।

योजना का लाभ प्राप्त करने के इच्छुक महानुभावों को एक लिखित/मौखिक एवं बौद्धिक परीक्षा पास करनी होगी। सफल परीक्षार्थियों में से प्रथम 40 अभ्यर्थियों को दिल्ली में आमन्त्रित करके, भोजन, आवास एवं तत्सम्बन्धी समस्त सुविधाएं निशुल्क प्रदान की जाएंगी तथा प्रशिक्षण की तैयारियां कराई जाएंगी। इस योजना का लाभ उठाने के इच्छुक विद्यार्थी/परीक्षार्थी अपने शैक्षिक प्रमाण पत्रों, वित्तीय स्थिति के विवरण तथा आवश्यक कागजातों की प्रति के साथ अपना आवेदन पत्र संस्थान की ईमेल आई.डी. dss.pratibha@gmail. com पर ईमेल करें। अधिक जानकारी के लिए मो. 9540002856 पर सम्पर्क करें। - ***व्यवस्थापक***

प्रतिष्ठा में,

तेजी से बढ़ रहे हैं
आर्यसमाज YouTube चैनल के दर्शक

90,00,000 + लोगों ने देखा अब तक

आप भी देखें और सब्सक्राइब अवश्य करें और अपने मित्रों, सम्बन्धियों को देखने की प्रेरणा करें।
यदि आप लगातार नई वीडियो देखना/सूचना प्राप्त करना चाहते हैं तो घंटी बटन दबाकर सब्सक्राइब करें।

यदि आप भी अपने आर्यसमाज के आयोजनों - भजन, प्रवचन, सन्देशात्मक कार्यक्रम, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों को इस चैनल पर अपलोड कराने के लिए upload@thearyasamaj.org पर भेजें। - महामन्त्री

वैदिक शगुन लिफाफे
महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में
सिक्के वाले मात्र 500/-रु. सैंकड़ा | बिना सिक्के मात्र 300/-रु. सैंकड़ा
प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें
वैदिक प्रकाशन, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, मो. 9540040339

देश और समाज विभाजन के षड़यन्त्र का पर्दाफास
आओ! जानें मनुस्मृति का सच
स्वाध्याय के लिए प्रक्षेप रहित संस्करण

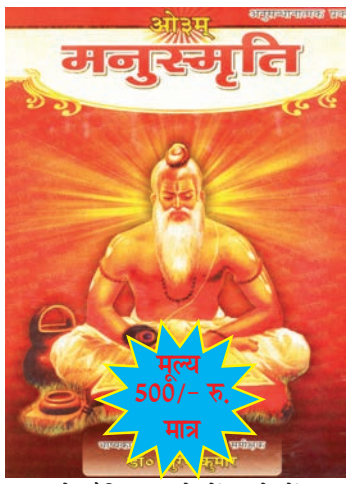

मनु के मौलिक आदेशों-उपदेशों का प्रसंगबद्ध वर्णन होने से स्वाध्यायशील महानुभावों के लिए परम उपयोगी।
मूल्य : ~~600~~/- 500/-
प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें
वैदिक प्रकाशन, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, मो. 9540040339

94 साल की उम्र में भी जब मेरे दांत ठीक रह सकते हैं तो आपके क्यों नहीं ?

एम डी एच
दंत मंजन
लौंग युक्त
(बिना तम्बाकू के)

23 जड़ी बूटियों एवं अन्य पदार्थों से निर्मित आयुर्वेदिक दंत मंजन

यह दंत मंजन ही नहीं दांतों का डाक्टर है।

महाशय धर्मपाल, चेयरमैन, एम.डी.एच. (प्रा0) लि0

इसके सुबह - शाम नियमित प्रयोग से दांतों का दर्द, पायेरिया, मुंह की दुर्गन्ध, मसूड़ों की सूजन, रक्त बहना, ठण्डा गरम पानी लगना, दांतों में जमी मैल छुड़ाने के लाभ के साथ-साथ दांत सारी उम्र चलें, पूरी तरह सुरक्षित व मजबूत रहें।

इसे नीचे बताई गई प्रयोग विधि अनुसार एक सप्ताह नियमित रूप से इस्तेमाल करें और फर्क महसूस करें। फायदा न होने पर पैसे वापस पायें।

प्रयोग-विधि सबसे पहले मुलायम टूथ ब्रश से दांतों में मंजन करें। उसके बाद थोड़ा मंजन बायें हाथ की हथेली पर डालकर अपने दायें हाथ की उंगली से दांतों और मसूडों पर आहिस्ता-आहिस्ता मलें। दांतों के अंदर के हिस्से को भी अपने अंगूठे से मलें। रात को सोने से पहले, सुबह उठने के बाद। अगर दांतों में दर्द होता हो तो दांतों में मंजन करके 10 मिनट के बाद थूक दें, कुल्ला न करें।

महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली - 110015
फोन नं० 011-41425106 - 07 - 08
Website : www.mdhspices.com
ESTD. 1919

शाह जी दी हट्टी
दुकान नं० 6679, खारी बावली,
दिल्ली - 110006 फोन नं० 011 - 23991082

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह